UGC Approved and Notified Journal - Sr. N. 48704
IIJIF Impact Factor- 2.897

ISSN 2393 - 8285

# Journal of Humanities and Culture

An International Research Refereed Journal
to Higher Education

VOL.IV 2017 No.4

Quarterly Journal
October - December 2017

Editor in Chief
*Anita Devi*
Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
*Anil Kumar*
Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

ISSN: 2393-8285

# Journal of Humanities and Culture

An International Research Refereed Journal Related to Higher Education
A Multidisciplinary Research Journal for All
Quarterly Journal
October - December
Vol. IV, No. 04, 2017

**Editor in Chief**
*Anita Devi*
Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

**Editor**
*Anil Kumar*
Research Scholar
Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

*Published By: Anil Kumar, Faculty of Law Banaras Hindu University, Varanasi*

- वस्तु सेवा कर एक राष्ट्र एक कर : एक अवलोकन 349-353
  *अखिलेश कुमार यादव*
- भूमंडलीकृत समय का यथार्थ चित्रित करती कहानियाँ 354-358
  *भूपेन्द्र कुमार सिंह*
- पुरातत्व के अध्ययन मे नियमित आवश्यकता एवं सजकता 359-361
  *सरोज कुमारी*
- प्राचीन भारतीय कला में मथुरा कला के अन्तर्गत नारी की सामाजिक स्थिति 362-363
  *गुंजन बैस*
- हिन्दू धर्म में अवतारवाद की अवधारणा : एक समीक्षात्मक विश्लेषण 364-367
  *सत्येन्द्र कुमार सिंह*
- सूफी विचारधारा एवं सामाजिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 368-371
  *प्रमोद कुमार*
- किशोरों में तनाव तथा व्यवहारात्मक समस्याओं को दूर करने में योग की भूमिका 372-375
  *शिबा सिंह*
- भारत में महिला सशक्तिकरण एवं संरक्षण की दिशा 376-378
  *शमीम अहमद खान*
- डॉ० हरिनारायण दीक्षित विरचित श्रीहनुमद्दूतम् (सन्देशकाव्यम्) की कथावस्तु 379-385
  *विशाल पाण्डेय*
- प्रमेय कमल मार्तण्ड एवं न्यायलीलावती : एक सूक्ष्ममीमांसा 386-392
  *साधना देवी*
- छायावादोत्तर कविता में व्यंग्य 393-395
  *सत्य प्रकाश चतुर्वेदी*
- अनुसूचित जातियों की महिलाओं पर आधुनिकता का प्रभाव 396-398
  *शिवांशी*
- बदलते सांस्कृतिक मूल्य एवं कमलेश्वर के उपन्यास 399-404
  *डॉ0 गजेन्द्र सिंह*
- बृहदारण्यकोपषिद में प्राण तत्व विवेचन 405-407
  *सुमित कुमार*
- मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में कबीर की कविता 408-411
  *प्रद्योत कुमार सिंह*
- उत्तराखण्ड के बाल साहित्यकारों की काव्य रचनाओं एवं बालगीतों में बिम्ब विधान 412-417
  *डॉ0 रंजू उनियाल*
- सभ्य समाज एवं सुशासन 418-420
  *डॉ0 शिव*
- राजनीति में आध्यात्मिकता का महत्व 421-426
  *नीता वाधवा*
- બંધારણમાં અન્ય પછાત વર્ગો માટેની જોગવાઇઓ 427-429
  ડો. ગણેશ પ્રજાપતી

# बदलते सांस्कृतिक मूल्य एवं कमलेश्वर के उपन्यास

*डॉ0 गजेन्द्र सिंह**

संस्कृति प्रत्येक समाज की अमूल्य धरोहर है तथा प्रत्येक समाज की अपनी एक अलग संस्कृति होती है। संस्कृति का सीधा सम्बन्ध मानव जीवन के उन कार्यों से होता है जो जीने का उचित ढंग सिखाते हैं तथा जो सांस्कृतिक मूल्य बनकर पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होते रहते हैं। कोई भी संस्कृति लम्बे समय में स्थापित होती तथा समय परिस्थितियों के अनुरूप बदलती भी रहती है। जब "अनेक शताब्दियों तक एक समाज के लोग जिस तरह खाते–पीते, रहते–सहते, पढ़ते–लिखते, सोचते–समझते और राजकाज चलाते अथवा धर्म–कर्म करते हैं– उन सभी कार्यों से संस्कृति उत्पन्न होती है।"[33]

यद्यपि सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृति कहीं न कहीं एक दूसरे राष्ट्र की संस्कृति को प्रभावित करती है और एक दूसरे के संस्कारों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं आदि को ग्रहण करती हुई आगे बढ़ती है लेकिन फिर भी हर संस्कृति के अपने कुछ सांस्कृतिक मूल्य होते हैं, और इन सबसे मिलकर ही सांस्कृतिक परिवेश बनता है। जो अन्य संस्कृतियों से उन संस्कृति विशेष को अलग करता है। हमारी भारतीय संस्कृति इसका जीता–जागता उदाहरण है। भारतीय संस्कृति विश्व की उदात्त संस्कृतियों में से एक है और उसका कारण है उसकी सबसे प्रमुख विशेषता समन्वय भावना। भारतवर्ष की धरती अनेक देवी–देवताओं की जन्मभूमि रही है। साथ ही यहां की संस्कृति समन्वित संस्कृति रही है, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी संस्कृतियों, धर्मों का समन्वय है। भारतीय संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्य– सत्य, अहिंसा, त्याग, भक्ति, प्रेम, ईमानदारी, परोपकार, भाईचारा, नैतिकता, नारी सम्मान आदि पुरातन काल से ही विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इसी कारण भारतीय संस्कृति के मूल्य भी वास्तव में उदात्त है, लेकिन आधुनिक भारतीय संस्कृति में पिछले कुछ दशकों से तेजी से बदलाव हुआ है। उसके मूल्यों में परिवर्तन आया है, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है, विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो गई है, साथ ही संस्कारों की मान्यताओं में भी बदलाव आया है। फलस्वरूप पूरा सांस्कृतिक परिवेश बदल गया है। इसी बदले हुए परिवेश को आधुनिक लेखक कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से परत–दर–परत खोला है, और इस बदलाव की चुनौतियों के माध्यम से समाज को चेताने का प्रयास किया है।

'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास में कमलेश्वर ने प्रेम, नैतिकता एवं नारी सम्मान के बदले हुए रूपों को उजागर किया है। इस उपन्यास की नायिका बंसिरी एक ऐसे पुरूष का प्रेम चाहती है जो हमेशा उसे साथ रखकर जिन्दगी भर प्रेम करें, लेकिन यह नही हो पाता। इसके विपरीत बंसिरी वासना की पूर्ति का साधन मात्र बनकर रह जाती है। विभिन्न पुरूष उसके नारी सम्मान को चूर–चूर करते हुए, उसका यौन शोषण करते हैं। अन्ततः बंसिरी बिक्री का समान बनकर बाजार में आ जाती है। वहाँ पर नैतिकता व नारी सम्मान तार–तार होकर बिखर जाता है। "गेंदा कवि उसकी टांगों में हाथ डालकर घुसा हुआ मुँह जबरदस्ती ऊपर उठा रहा है.....पर बार–बार वह चेहरा घुटनों में धंस जाता है। हल्की–सी एक झलक उन लोगों को दिखाई पड़ी, गोरा रंग.....सिसकियाँ.....इनसे सरम कैसी!' गेंदा कवि के शब्द, पुचकारना–मानना। 'नखरे दिखा

* असि0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय चन्द्रबदनी, टिहरी गढवाल, उत्तराखण्ड

रही है.....जरा मेरे साथ अकेला छोड़ दो.....दो मिनट में हरा कर दूँ....' नगन मिस्त्री की बात उसके कानों में घुम रही है।"[34] इस प्रकार कमलेश्वर ने नैतिकता, प्रेम व नारी सम्मान के बदलते रूप को दिखाकर पाठक के मन में अनेक प्रश्न छोड दिए हैं। इन प्रश्नों का समाधान स्वयं पाठक खोजता नजर आता है। साथ ही इनके सुधार के लिए प्रतिबद्ध होता भी नजर आता है।

'लौटे हुए मुसाफ़िर' उपन्यास में कमलेश्वर ने भाईचारा, प्रेम, त्याग आदि मूल्यों का पतन दिखाकर, इन मूल्यों के बदले हुए रूप को उजागर किया है। इस उपन्यास की कथा के केन्द्र में चिकवों की बस्ती है। चिकवों की बस्ती का भाईचारा एवं प्रेम समाप्त हो जाता है। नफरत व घृणा चारों तरफ फैल जाती है। हिन्दू व मुसलमान एक दूसरे को अंगार भरी नजरों से देखते हैं। जल्द से जल्द वे हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का बँटवारा चाहते हैं। "सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था।"[35] इस उपन्यास के पात्र यासीन, मकसूद जुम्मन साई, सत्तार आदि ऐसे पात्र हैं। जो इस बस्ती के लोगों के बीच स्वार्थ, नफरत व घृणा का बीज बोते हैं। फलस्वरूप पूरी बस्ती में तनाव उत्पन्न हो जाता है। इसी तनाव, नफरत, घृणा को उजागर करता एक उदाहरण देखने योग्य है– "स्कूलों और मदरसों में बच्चों की हाजिरी बहुत गिर गई थी। कोई मुसलमान लड़का हिन्दू मुहल्ले से होकर स्कूल नहीं गया था। हिन्दू लड़के मुसलमानों के मुहल्ले के पास तक नहीं गये थे। बाजारों में दुर्गा, चण्डी, शिवाजी, महाराणा प्रताप, हरी सिंह नलवा और पृथ्वीराज की तस्वीरें और ज्यादा दिखाई देने लगी थीं। पान वालों के यहाँ से फिल्मी सितारों की तस्वीरें उतर गई थीं। और उनकी जगह वीर हिन्दू सेनानियों की तस्वीरें लटक गयी थीं। बचन सिंह ड्राइवर ने अपने ट्रक के पीछे लिखी इबारत–अच्छा नमस्ते, फिर मिलेंगे– मिटवाकर लिखवा लिया था– जै दुर्गा माता। जय चण्डी।"[36] इस प्रकार पूरी बस्ती का भाईचारा एवं प्रेम समाप्त होकर नफरत एवं घृणा में बदल जाता है। त्याग के स्थान पर स्वार्थ जन्म ले लेता है। फलस्वरूप सारी बस्ती उजड जाती है।

'तीसरा आदमी' उपन्यास में कमलेश्वर ने प्रेम, ईमानदारी, सत्य आदि मूल्यों के बदलते रूप को उजागर किया है। इस उपन्यास की नायिका चित्रा व उसके पति नरेश के प्रेम सम्बन्धों में सुमंत नामक तीसरे व्यक्ति के कारण दरार पड़ जाती है। नरेश अपनी पत्नी चित्रा पर विश्वास करना बन्द कर देता है। वह चित्रा व सुमंत के दिये गये स्पष्टीकरण को सत्य न मानकर झूठ मानता है। नरेश सोचता है– 'तभी मुझे उसमें झूठ की गंध लगने लगी थी। यह कोई इतना बड़ा हादसा नहीं था, जिसे दस बार मेरे सामने दोहराया जाए।.....अपने को बहुत सहजता से दोनों ने प्रकट किया था। और उन पिछले सात दिनों में अपने अलग–अलग रहने की स्थितियों को ही दोहराया था।"[37] इस शक के कारण नरेश व चित्रा का प्रेम, नफरत में बदल जाता है। नरेश चित्रा से नफरत करने लगता है। वह सोचता है–"बस में बैठे–बैठे उस दिन मुझे पहली बार चित्रा से नफरत–सी हुई थी। मैंने कई बार गौर से उसे देखा था और तब मुझे एकाएक उसके शरीर का अनुपात और नक्शा बहुत भौंड़े–से लगे थे। पता नहीं, उसमें से क्या खो गया था.....।"[38] इस प्रकार चित्रा व नरेश के बीच जन्मी नफरत के कारण उनका दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है। जोकि बदलते मूल्यों का ही परिणाम है।

कमलेश्वर ने 'डाक बंगला' उपन्यास में नैतिकता, प्रेम, ईमानदारी आदि मूल्यों के पतन का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास की नायिका इरा एक ऐसी नारी है। जो विभिन्न पुरूषों के द्वारा अलग–अलग ढंग से छली जाती है। उसकी जिन्दगी में आने वाला पहला पुरूष प्रेमी व पति विमल उसकी वफादारी पर शक करता है, जिसके कारण उसका प्रेम, घृणा में बदल जाता है। फलस्वरूप वह इरा को छोड़कर चला जाता है। विमल व इरा के बीच जन्मे अविश्वास को इंगित करता यह उदाहरण दृष्टव्य है यथा– "विमल को भी वे ईमानदारी भरे क्षण कभी–कभार ही मिलते थे। विश्वास के वे क्षण उसके पास भी कम होते जा रहे थे। वह खुद मजबूर था। दिन–ब–दिन उसका मन शंकालु होता जा रहा था। अब वह बड़ी मुश्किल से किसी भी बात को सच मान पाता था। विमल जैसा आँख मूंदकर बात मान लेने वाला आदमी अब खुली आँखों देखते हुए भी किसी बात पर एकदम विश्वास करने को तैयार नहीं होता था। बतरा के बंगले के आस–पास वह चक्कर काटता, और मुझसे अपने मन के चोर को छिपाता था।"[39] इरा व विमल के सम्बन्धों के टूटने के बाद बतरा नैतिकता को ताख पर रखकर, फरेब का सहारा लेते हुए इरा से अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाता है। फलस्वरूप इरा के गर्भ ठहर जाता है, लेकिन बतरा इरा को धोखा देते हुए दवाईयों के द्वारा उसका गर्भ गिरा देता है। इस फरेब व धोखे को उजागर करता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा– "बतरा खुद मुझे दवाईयाँ और टॉनिक पिलाता था।.....पर यह उसका एक भयानक फरेब था, मेरे साथ गहरा धोखा था।"[40]

'काली आँधी' उपन्यास में कमलेश्वर ने सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम, ईमानदारी, भाईचारा, नैतिकता आदि का पतन दिखाकर इनके बदले रूप को उजागर किया है। इस उपन्यास की नायिका मालती अतिमहत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञ है। वह राजनीतिक स्वार्थ के चलते अपने पति के प्रेम को भी नहीं समझ पाती है। मालती व उसके पति जग्गी बाबू के बीच प्रेम के बजाय घृणा रह जाती है। फलस्वरूप इनका रिश्ता खोखला होकर रह जाता है। इनके प्रेम के पतन को इंगित करता जग्गी बाबू का यह कथन दृष्टव्य है– "सही बात कहूँ मालती। अब तुम्हें रिश्तों की जरूरत ही नहीं रह गई है।.....खामख्वाह इन्हें ढोते जाने से अब तुम्हें कुछ हासिल होने वाला नहीं है। मालती ने उन्हें गुस्से से भरी आँखों से देखा था।"[41] इसी प्रकार मालती राजनीति में असत्य, हिंसा, बेईमानी, स्वार्थ, अनैतिकता का सहारा लेकर चुनाव प्रचार करती है और जीत भी हासिल करती है। फलस्वरूप जनता व विपक्षी पार्टियाँ मालती के खिलाफ मोर्चा खोल देती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि मालती के भाषण के दौरान हिंसा भड़क जाती है। "नारों का यह युद्ध कुछ देर चलता रहा.....और जोशो–खरोश में हाथापाई हो गई। पत्थर बाजी हुई। भगदड मची और चीख–पुकार के साथ सब कुछ तहस–नहस हो गया। मालती जी एक पत्थर से जख्मी हुई थीं। बूढे नियाँ भी अपना कमजोर घुटना पकड़े वहीं बबूले पर पड़े बिलबिला रहे थे।"[42] कमलेश्वर ने 'आगामी अतीत' उपन्यास में प्रेम, अहिंसा, ईमानदारी, नारी सम्मान, नैतिकता आदि का पतन दिखाया है। इस उपन्यास की नायिका चन्दा तथा नायक कमलबोस एक दूसरे को प्रेम करते हुए शादी का वादा करते हैं, लेकिन कमलबोस अपना वादा तोड़ते हुए चन्दा को धोखा दे देता है। फलस्वरूप उनके प्रेम का पतन हो जाता है। इधर चन्दा तीन वर्ष तक कमलबोस का इन्तजार करती है। "तीन साल तक वह जिद्द में रुकी रही.....किसी की बात ही नहीं सुनती थी.....लेकिन कोई लौटकर आता है, बाबूजी?"[43] उधर कमल बोस निकम्मा नायक धनाढ्य लड़की से विवाह कर लेता है, लेकिन इन दोनों पति–पत्नी के बीच घृणा व हिंसा जन्म ले लेती है। इस हिंसा का कारण होता है निकम्मा की स्वार्थी व बेईमान प्रवृत्ति। फलस्वरूप दोनों में झगड़ा होता है। "बकवास मत करो। बेहद गुस्से में कमलबोस ने एक जोर निकम्मा

के मार दिया था, × × × घर पर भयानक झगड़ा हुआ था।"[44] चन्दा की मृत्यु के बाद उसकी बेटी चाँदनी वैश्या बन जाती है और धंधा करके अपना पेट पालती है। लेखक ने चाँदनी के माध्यम से नैतिक मूल्य व नारी सम्मान का पतन दिखाया है। वैश्या का धन्धा ऐसा होता है जिसमें ना तो इज्जत रहती है और ना कोई उस नारी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। सारे पुरूष उसके साथ अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाकर अपनी वासना शान्त करते हैं। नैतिकता व नारी सम्मान के पतन की पोल खोलता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा– "काम–धंधे वाली औरत हूँ.....सीधे–सीधे अपना काम करो तो मेरा पैसा भी पटता जाये। जबर्दस्ती भार चढ़ रहा है। × × × हम इश्क नहीं करते, पेट भरते हैं पेट! पाँच मिनट में एक आदमी फारिग होता है समझे!"[45]

'रेगिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने त्याग, परोपकार और नैतिकता के बदलते रूप की पोल खोली है। इस उपन्यास का नायक विश्वनाथ एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, देशप्रेमी, परोपकारी एवं अहिंसावादी है। लेकिन वह अपने ताऊ, एमेले एवं अन्य लोगों के स्वार्थ, लालच एवं अनैतिकता के कारण परेशान हो उठता है। एक बार तो वह आत्महत्या करने की भी सोचता है। उसके ताऊ स्वार्थ व लालच के चलते उनकी जमीन को हड़प लेते हैं। विश्वनाथ अपने ताऊ की करतूत के बारे में सोचता है– "बाबूजी नहीं रहे और ताऊजी ने बेदखली कराके अब गाँव में उसके लौटने का भी कोई रास्ता नहीं छोड़ा है।"[46] विश्वनाथ जब अपने ताऊ की करतूत से दुखी होकर, हिन्दी मंदिर बनवाने के लिए एमेले (मन्त्री) के पास जमीन माँगने जाता है। तो एमेले भी अपने परोपकार, त्याग, नैतिकता को ताख पर रखकर जमीन ना देकर विश्वनाथ की मजाक बनाता है। एमेले के परोपकार, त्याग एवं नैतिकता के पतन को इंगित करता एक उदाहरण देखने योग्य है यथा– "मेरी जेब में जमीन रखी है, निकाल लो विश्वनाथ जी! एमेले ने टके–सा जवाब दे दिया था। उनके आस–पास बैठे मुसाहिब हो–हो करके हँस पड़े थे। विश्वनाथ देखता रह गया था। उसका मुँह उतर आया था। जबान सूखने लगी थी। इतने बड़े गांधी जी भी ऐसे बात नहीं करते थे। वह उन्हें देखता रह गया था। शायद एमेले उसे और ज्यादा बेइज्जत करने पर उतारू थे। कहने लगे–देखा चौधरी साहब! ऐसे लोग चले आते हैं! इन्हें देखिए, जमीन मांगने आए हैं! मुँह उठाए सीधे यहीं चले आते हैं.....।"[47]

कमलेश्वर ने 'अम्मा' उपन्यास में अहिंसा, नारी सम्मान, त्याग आदि मूल्यों का पतन दिखाया है। इस उपन्यास की नायिका शान्ता ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, देशप्रेमी है। उसका पति प्रवीन स्वार्थी, गददार, कर्तव्य विमुख, हिंसक व नारी का अपमान करने वाला है। वह अपनी पत्नी शान्ता को इसी के चलते अपमानित करते हुए पीटता है। "वह ठीक उसी तरह शान्ता के सीने पर चढ़ बैठा जिस तरह पुलिस के जवान उसे जमीन पर पटककर उसकी छाती पर चढ़ बैठे थे। और फिर उसने उन्हीं की तरह बड़ी बेरहमी से शान्ता को पीटना शुरू कर दिया। शान्ता की दर्द–भरी चीखें निकलने लगीं।"[48] इसी प्रकार उपन्यास का पात्र मिस्टर जीत है। वह शान्ता की बेटी मुन्नी का पति है। उसकी त्याग भावना व नैतिकता का पतन हो चुका है। इसलिए वह अमीर लड़की मुन्नी को प्रेम जाल में फंसाकर उसकी दौलत पर अपना हक जमाने लगता है। उसकी स्वार्थपरता व अनैतिकता की पोल खोलता यह उदाहरण दृष्टव्य है यथा– "मैं जानना चाहता हूँ कि मेरा हिस्सा कहाँ गया? जीत चीखने लगा, मैं इस घर का दामाद हूँ। मुझे



मेरा हिस्सा हर हालत में मिलना ही चाहिए।"[49]

'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में कमलेश्वर ने अहिंसा, प्रेम, त्याग, ईमानदारी, नारी सम्मान, नैतिकता आदि मूल्यों का बड़ा ही मार्मिक पतन दिखाया है। इस उपन्यास की नायिका समीरा एक अंहिसावादी, ईमानदार, प्रेम से परिपूर्ण, त्यागी एवं नैतिकतावादी नारी है। लेकिन उसके नाना सुरेन्द्र सिंह, पिता नरेन्द्र सिंह, पति जय सिंह तीनों ही हिंसक, स्वार्थी, झूठे व नारी का अपमान करने वाले हैं। इस सब की करतूतों के कारण समीरा व उसकी नानी राजलक्ष्मी को अकसर पीड़ा व अपमान झेलना पड़ता है। एक उदाहरण देखने योग्य है जो नरेन्द्र सिंह अहिंसा, प्रेम, त्याग, नारी सम्मान, नैतिकता, ईमानदारी आदि मूल्यों के पतन को इंगित करता है यथा– "कुँवर नरेन्द्र सिंह ने क्रोध से तिलमिलाकर एक जोरदार तमाचा समीरा के गाल पर जड़ दिया, तुमने यह क्या किया? लाखों रूपयें पर पानी फेर दिया। तुम यहाँ आई क्यों.....? तुमने इन परिन्दों को आजाद क्यों किया?"[50]

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में भी बदलते मूल्यों की पोल खोली है। इस उपन्यास में सत्य, अहिंसा, त्याग, भक्ति, प्रेम, ईमानदारी, परोपकार, भाईचारा, नैतिकता, नारी सम्मान, उदारता आदि मूल्यों का पतन बड़ा ही दारुण है। यह पतन मानव समुदाय के समक्ष अनेक प्रश्न खड़े कर देता है। इस उपन्यास के बारे में सीमा शर्मा लिखती है– "कितने पाकिस्तान में कमलेश्वर ने पूरे मानव समुदाय के समक्ष यह प्रश्न बड़ी व्याकुलता के साथ उठाया है कि आज मानव प्रेम, मित्रता, भाईचारा, समन्वयशीलता, शान्ति, अहिंसा, मानवीयता, उदारता, सहिष्णुता जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों को क्यों भूलता जा रहा है? मानव क्यों सकीर्णता, घृणा, अहंकार, जाति, धर्म, नस्ल, वर्ग, वर्ण के आधार पर बंटकर विनाश की ओर बढ़ता चला जा रहा है?"[51] इस प्रकार इस उपन्यास में मूल्यों का पतन बड़ा ही त्रासदीपूर्ण है। एक उदाहरण देखने योग्य है जो इन मूल्यों के पतन की पोल खोलता है यथा– "पूरी दुनिया में मानवाधिकारों का हनन हो रहा है, हिंसा, हत्या, कष्ट, उत्पीड़न, यातना, बेईमानी, बदकारी के सैलाब उमड रहे हैं, लेकिन फिर भी कुछ ऐसा शुभ है, जो हमारी अन्तरात्मा की रक्षा भी कर रहा है, जो घटित हो रहा है, पर घटित होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है, जो सुनाई पड़ता है, पर सुनता हुआ प्रतीत नहीं होता.....यही हमारे समय की त्रासदी है, क्योंकि हम मूल्यबोध के बावजूद मूल्यहीनता की चपेट में हैं।"[52]

कमलेश्वर ने 'पति–पत्नी और वह' उपन्यास में सत्य, प्रेम, ईमानदारी एवं नैतिकता का पतन दिखाया है। इस उपन्यास का नायक रंजीत झूठा, मक्कार, फरेबी, नारी का यौन शोषण करने वाला है। वह अपनी पत्नी शारदा को बीमार बताकर अपनी सेक्रेटरियों से यौन सम्बन्ध बनाकर अपनी वासना को शान्त करता है। एक उदाहरण देखने योग्य है जो रंजीत के सत्य, प्रेम, ईमानदारी एवं नैतिकता के पतन को इंगित करता है। यथा– "शारदा रूपयों का पैकेट लिए निर्मला के बारे में सोचने लगी। वह जैसे–जैसे निर्मला के बारे में सोचती जा रही थी, उसे इस बात का विश्वास होता जा रहा था कि वास्तव में निर्मला का कोई दोष नहीं था। निर्मला की जगह अगर और कोई लड़की होती तो वह भी रंजीत के इस झूठे नाटक से प्रभावित होकर उसके जाल में फँस जाती। रंजीत के लिए उसके मन में जो घृणा और क्रोध पैदा हो गया था, इस घटना से और भी बढ़ गया।"[53]

'एक और चन्द्रकान्ता' उपन्यास में भी कमलेश्वर ने सत्य, अहिंसा, त्याग, ईमानदारी आदि

मूल्यों का पतन दिखाकर उनके बदलते रूप को चित्रित किया है। इस उपन्यास का पात्र क्रूर सिंह एक ऐसा सैनिक (सेनापति) है जो झूठ, हिंसा, स्वार्थ, फरेब, धोखे का सहारा लेकर अपने ही महाराज से गद्दारी करता है। वह अपने महाराज जयसिंह के इकलौते पुत्र राजकुमार शक्ति सिंह की हत्या करवा देता है और स्वयं उनकी बेटी चन्द्रकान्ता व उनके राज्य की सत्ता को हथिया लेना चाहता है। क्रूर सिंह व उसके भाई जालिम सिंह के झूठ, हिंसा, फरेब, धोखे, स्वार्थ की पोल खोलता यह उदाहरण देखने योग्य हैं यथा– "राजकुमार वीरेन्द्र सिंह दहाड़ उठे, 'जिन महाराजा जय सिंह का नमक खाकर क्रूर सिंह और तू पला–बढ़ा.....जिन्होंने तुम दोनों भाईयों को ही नहीं तुम्हारे पूरे परिवार की परवरिश की, तुमने उन्हीं के इकलौते बेटे को मार डाला!' सल्तनतों को हासिल करने का यही दस्तूर है.....और सुन वीरेन्द्र सिंह! उस दिन तो तेरी आत्मा भी जलकर राख हो जाएगी जिस दिन तू महाराजा के रूप में मेरे भाई क्रूर सिंह को विजयगढ़ के राजसिंहासन पर बैठा देखेगा। मेरे भाई क्रूर सिंह के सिर पर विजयगढ़ के महाराजा का राजमुकुट होगा और उसके साथ सिंहासन पर उसके आगोश में बैठी होगी तेरी महबूबा विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता!"[54]

इस प्रकार कमलेश्वर के उपन्यासों में सत्य, अहिंसा, त्याग, भक्ति, प्रेम, ईमानदारी, परोपकार, भाईचारा, नैतिकता, नारी सम्मान आदि मूल्यों का पतन देखने को मिलता है। इनके बदलते रूप का चित्रण मिलता है। यह चित्रण समाज व पाठक को उद्वेलित करने वाला है। इन उपन्यासों को पढ़कर पाठक के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, साथ ही उसके मन–मस्तिष्क में अनेक प्रश्न खड़े हो जाते हैं। जिनका उत्तर वह स्वयं ढूढ़ता नजर आता है। इसी के साथ वह इन मूल्यों के बचाव के प्रति प्रतिबद्ध भी होता नजर आता है। यही प्रतिबद्धता कमलेश्वर के उपन्यासों को सार्थक बना देती है। भारतीय संस्कृति के बदलते मूल्यों का यथार्थ चित्रण करके कमलेश्वर ने पाठक व समाज को चेताने का कार्य किया है, जिसमें वे सफल भी हुए हैं। जिससे कि समाज अपने संस्कारों की मान्यताओं के होते ह्रास को रोककर अपनी संस्कृति व संस्कारों को बचा सके। साथ ही इनके दुष्परिणामों के खिलाफ प्रतिबद्ध हो सके।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. रामधारी सिंह 'दिनकर' : संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ 652
2. कमलेश्वर : एक सड़क सत्तावन गलियाँ, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 47
3. कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 89
4. कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 142–143
5. कमलेश्वर : तीसरा आदमी, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 190
6. कमलेश्वर : तीसरा आदमी, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 172
7. कमलेश्वर : डाक बंगला, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 237
8. कमलेश्वर : डाक बंगला, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 255
9. कमलेश्वर : काली आँधी, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 368
10. कमलेश्वर : काली आँधी, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 400
11. कमलेश्वर : अगामी अतीत, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 465
12. कमलेश्वर : अगामी अतीत, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 472
13. कमलेश्वर : अगामी अतीत, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 500
14. कमलेश्वर : रेगिस्तान, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 677
15. कमलेश्वर : रेगिस्तान, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 705
16. कमलेश्वर : अम्मा, पृष्ठ 66
17. कमलेश्वर : अम्मा, पृष्ठ 126
18. कमलेश्वर : अनबीता व्यतीत, पृष्ठ 63
19. सं0 डॉ0 नवीन चन्द्र लोहनी : नयी सदी के उपन्यास, पृष्ठ 68
20. कमलेश्वर : कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 201
21. कमलेश्वर : पति–पत्नी और वह, पृष्ठ 129
22. कमलेश्वर : एक और चन्द्रकान्ता, भाग–एक, पृष्ठ 53